

छत्तीसगढ़ राज्य के जशपुर शहर में फुटकर व्यापारियों की आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

¹ **बोध प्रकाश राठौर**

अतिथि व्याख्याता (अर्थशास्त्र), शासकीय राम भजन राय एन.ई.एस. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जशपुर, (छत्तीसगढ़)

² **डॉ. लखेश्वर**

अतिथि व्याख्याता (वाणिज्य), शासकीय राम भजन राय एन.ई.एस. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जशपुर, (छत्तीसगढ़)

³ **मंजुलता सिदार**

अतिथि व्याख्याता (कम्प्यूटर एप्लिकेशन), शासकीय इंद्रावती महाविद्यालय, भोपालपट्टनम, बीजापुर, (छत्तीसगढ़)

सारांश—

अर्थव्यवस्था में फुटकर व्यापारियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, ये वह व्यापारी होते हैं जो वस्तुओं एवं सेवाओं को अंतिम उपभोक्ताओं तक पहुंच सुनिश्चित करने के साथ ही बड़े स्तर पर रोजगार सृजन, स्वरोजगार, स्थानीय राजस्व एवं आर्थिक विकास तथा बाजारवादी आर्थिक परितंत्र को सरल बनाते हैं। फुटकर व्यापारी संगठित एवं असंगठित दोनों प्रकार के होते हैं। संगठित क्षेत्र में फुटकर व्यापारियों का व्यवसाय पंजीकृत एवं व्यवस्थित होता है, जैसे बड़े स्तर पर रिटेल स्टोर, ऑनलाइन रिटेल स्टोर, सुपर मार्केट इत्यादि, परंतु असंगठित क्षेत्र में संलग्न फुटकर व्यापारियों का व्यवसाय छोटे स्तर पर या दैनिक रूप से जीवन यापन के लिए होता है, जैसे फल एवं सब्जी विक्रेता, ठेला-रेहड़ी में सामान बेचने वाले व्यापारी, फेरीवाला, छोटा किराना दुकान इत्यादि। इस अध्ययन में हमारा उद्देश्य असंगठित क्षेत्र में कार्य कर रहे फुटकर व्यापारियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है।

शब्द कुंजी— फुटकर व्यापारियों, असंगठित क्षेत्र, आर्थिक स्थिति, व्यापारिक ऋण।

1. प्रस्तावना—

ASUSE 2023–24 एवं 2025 के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2025 में राष्ट्रीय स्तर पर असंगठित क्षेत्र में 26.49 प्रतिशत प्रतिष्ठान एवं 27.55 प्रतिशत श्रमिक सम्मिलित है। वहीं 2023–24 के तथ्यानुसार असंगठित गैर-कृषि क्षेत्र में कुल 7.34 करोड़ प्रतिष्ठान एवं 12.06 करोड़ श्रमिक अपना योगदान दे रहे हैं। राष्ट्रीय व्यापार क्षेत्र में पुरुष सहभागिता 80.79 प्रतिशत तथा महिला सहभागिता 19.21 प्रतिशत है। इस दृष्टिकोण से कुल पुरुष सहभागिता, महिला सहभागिता की तुलना में अधिक है, वहीं कुल असंगठित क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिशत 28.12 प्रतिशत है। वर्ष 2025 में असंगठित क्षेत्र में 74.52 लाख रोजगार वर्ष 2024 की तुलना में अधिक प्रदान किया गया।

छत्तीसगढ़ धन-धान्य से समृद्ध खनिज भंडारण एवं उत्पादन की दृष्टि में अग्रणी एवं जनजाति लोक-कला तथा संस्कृतियों का सामंजस्य एवं समन्वयमूलक प्रदेश है। जहां कुल जनसंख्या का लगभग 31 प्रतिशत जनसंख्या जनजाति है। ये ज्यादातर सरगुजा एवं बस्तर संभाग, मैकल श्रेणी क्षेत्र, पूर्वी तथा पूर्वी-पश्चिमी पर्वतीय क्षेत्र में निवास करते हैं, जबकि मैदानी क्षेत्र में अवस्थित मध्य छत्तीसगढ़ में उद्योग तथा धान की पैदावार अधिक मात्रा में होती है, इसलिए यह धान के कटोरा कहे जाने वाले प्रदेश है।

छत्तीसगढ़ जनजातीय संस्कृति में बाजार की अवधारणा आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक संबंधों का अद्भुत समन्वय दिखाई पड़ता है। इस बाजार और संबंधित जिलों में ज्यादातर संख्या में फुटकर व्यापारी अपने घरेलू उपयोग एवं कृषि उत्पादन के सामानों को बेचकर वहीं से अपने जरूरत के सामानों जो दैनिक रूप से उपयोग किए जाते हैं, उसे लेकर जीवन-यापन करते हैं। यहां बाजारवादी परितंत्र मिश्रित है, जिसमें पशुबाजार, साग-सब्जी, कपड़े, बर्तन, औजार एवं अन्य सामान देखने को मिलते हैं। छत्तीसगढ़ के कुछ प्रसिद्ध बाजार, जैसे- बखरूपारा बाजार नारायणपुर जिला, तोकापाल बाजार बस्तर जिला, कोटा बाजार सुकमा जिला, सन्ना का बाजार जशपुर जिला तथा अन्य सभी बाजार, जिसमें फुटकर व्यापारी प्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ता से जुड़ते हैं तथा उनके जरूरत के सामानों की आपूर्ति करते हैं।

छत्तीसगढ़ के पूर्वी सीमा का निर्धारण करने वाला पाट प्रदेश पर पर्वतीय क्षेत्रों से घिरा जशपुर जिला के अंतर्गत आने वाला जशपुर शहर विभिन्न धार्मिक मान्यताओं, जनजाति प्रदेशों, पर्यटन स्थलों, बागानी एवं मोटे अनाज के कृषि के लिए प्रसिद्ध क्षेत्र है। शहर में फुटकर व्यापारियों की संख्या अत्यधिक है। यहां आसपास के गांव से लोग अपने घरेलू उत्पाद एवं कृषि संबंधित उत्पाद, जैसे साग-सब्जी, फल, औजार, बाँस, लकड़ी एवं मिट्टी के बर्तन, टोकरी तथा पत्थर से निर्मित सामग्री जैसे, सिल- लोढ़ा, खलपट्टा, ओखली-धूसर जैसे हस्त निर्मित उत्पाद को भी बेचकर आवश्यकता पूर्ति करते हैं। जशपुर शहर के रंजीता मैदान समीप, बालाजी मंदिर के सामने, बस स्टैंड स्थित बाजार में रोड के दोनों ओर एवं शहर में विभिन्न क्षेत्रों में कई स्थानों में फुटकर व्यापारियों को देखा जा सकता है, साथ ही शहर में विभिन्न उत्पादों के लिए अधिकतर संख्या में छोटे-छोटे दुकान अवस्थित है। यह सभी शहर के अर्थव्यवस्था के मुख्य आर्थिक गतिविधियों का केंद्र है।

2. साहित्य की समीक्षा

1. शर्मा ए. एवं मिश्रा एस. (2021) ने अपने शोध अध्ययन "भारतीय खुदरा बाजार और डिजिटल चुनौती" में बताया है कि छोटे नगरों के लगभग 65 प्रतिशत पारंपरिक फुटकर व्यापारियों ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के कारण अपने ग्राहकों को खो रहे हैं।

2. वर्मा. आर. के. (2022) ने अपने शोध अध्ययन "छत्तीसगढ़ के अर्ध-शहरी क्षेत्रों में असंगठित क्षेत्र के व्यापारियों की वित्तीय चुनौतियां" में बताया है कि संस्थागत ऋण की पहुंच इन छोटे फुटकर व्यापारियों

तक पहुंच बहुत काम है, जिसके कारण ये अपनी दैनिक कार्यशील पूंजी की आवश्यकता के लिए गैर व्यापारिक संस्थागत स्रोतों जैसे स्थानीय साहूकार, रिश्तेदार एवं मित्रों आदि से उच्च ब्याज दर से पूंजी प्राप्त करते हैं।

3. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (NSSO) की रिपोर्ट के अनुसार— असंगठित खुदरा क्षेत्र के लोगों के सामने आने वाली ये समस्या भारत की अर्थव्यवस्था का एक बहुत संवेदनशील समस्या है, कृषि के बाद असंगठित खुदरा क्षेत्र सबसे अधिक रोजगार देता है तथा इस क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के पास सामाजिक सुरक्षा और निश्चित आय के साधनों का अत्याधिक आभाव है।

3. उद्देश्य

1. छत्तीसगढ़ के जशपुर शहर फुटकर व्यापारियों की सामाजिक—आर्थिक स्थिति, उनकी पृष्ठभूमि और उनकी आय की पर्याप्तता का अध्ययन करना।
2. जशपुर शहर फुटकर व्यापारियों की औसत मासिक आय का बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है या नहीं का अध्ययन करना।
3. फुटकर व्यापारियों को प्राप्त ऋण माध्यम का अध्ययन करना।

4. शोध पद्धति –

शोध प्रणाली के लिए प्राथमिक समंक एवं द्वितीय समंक दोनों आंकड़ों का उपयोग किया गया है। जिसमें प्राथमिक आंकड़ों हेतु छत्तीसगढ़ के जशपुर शहर के विभिन्न फुटकर व्यापारियों से यादृच्छिक प्रतिचयन पद्धति द्वारा चयन करते हुए अवलोकन के माध्यम से आंकड़े एकत्रित किए गए हैं, साथ ही द्वितीय समंक हेतु (MOSPI) Ministry of statistics and programme Implementation की (ASUSE REPORT) ANNUAL Survey of Unincorporated Sector Enterprises एवं छत्तीसगढ़ शासन की आर्थिक सर्वेक्षण एवं विभिन्न शोध पत्रिकाओं से आंकड़े लिए गए हैं।

5. परिकल्पनाएं

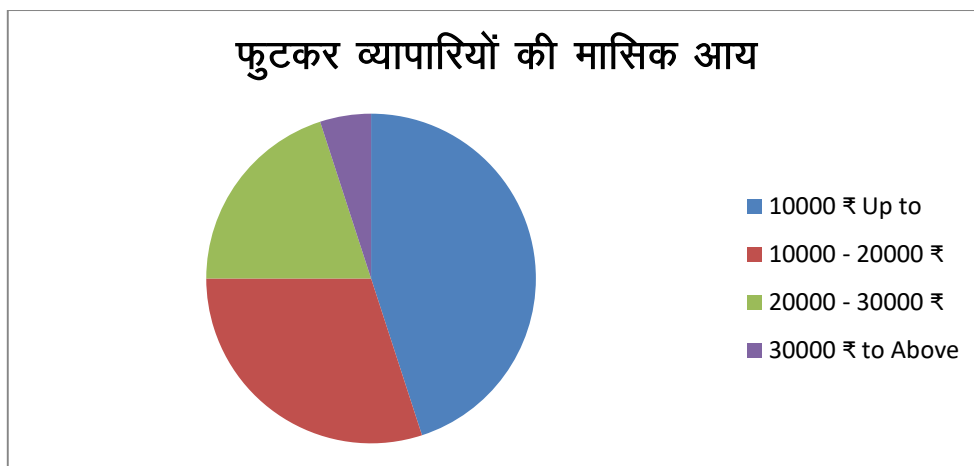
H₀ - फुटकर व्यापारियों की आर्थिक स्थिति और उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि, लिंग और व्यापार के स्थान से सीधे प्रभावित नहीं होती है।

H₁ - फुटकर व्यापारियों की आर्थिक स्थिति और उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि, लिंग और व्यापार के स्थान से सीधे प्रभावित होती है।

H₀ - छत्तीसगढ़ के जशपुर शहर में फुटकर व्यापारियों की मासिक आय, उनके परिवार की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

H₁ - छत्तीसगढ़ के जशपुर शहर में फुटकर व्यापारियों की मासिक आय, उनके परिवार की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त है।

6. छत्तीसगढ़ के जशपुर शहर के फुटकर व्यापारियों की मासिक आय की अवलोकन—



व्याख्या— प्राथमिक समंक के अनुसार प्राप्त आंकड़ों को जानने के लिए व्यापारियों की मासिक शुद्ध आय का श्रेणीवार अवलोकन किया गया है — जिसके अनुसार 45 प्रतिशत फुटकर व्यापारियों का प्रतिमाह आय 10000 रुपए से कम कमा पाते हैं, जो यह बताता है कि छत्तीसगढ़ का जशपुर शहर में फुटकर व्यापारियों का एक बड़ा हिस्सा 'अल्प-आय' श्रेणी में आता है। जो अपनी बुनियादी आवश्यकता आवास, कपड़ा, भोजन एवं शिक्षा को पूरा करने के लिए प्राप्त नहीं है। तथा ₹10000–20000 प्राप्त करने वाले फुटकर व्यापारियों का 30 प्रतिशत है। वही ₹20000–30000 प्राप्त करने वाले फुटकर व्यापार की 20 प्रतिशत है तथा केवल 5 प्रतिशत फुटकर व्यापारियों ऐसे हैं जिनकी शुद्ध आय ₹30000 से अधिक है, जो अपने मुख्य रूप से बड़े किराना दुकानदार के मालिक हैं तथा अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्राप्त आय अर्जित कर रहे हैं।

7. फुटकर व्यापारियों के संबंध में भारत की स्थिति—

भारत में असंगठित क्षेत्र में फुटकर व्यापारियों की प्रतिशत 80 से 90 प्रतिशत है जबकि संगठित क्षेत्र में यही प्रतिशत लगभग 10 से 20 प्रतिशत है। ASUSE REPORT 2023–24 एवं 2025 के माध्यम से फुटकर व्यापारियों की भारत में स्थिति को प्रस्तुत किया जा रहा है—

तालिका क्र. 1 ASUSE REPORT 2023–24 एवं 2025 का तुलनात्मक अध्ययन

संकेतक	2023–24 रिपोर्ट	2025 रिपोर्ट	परिवर्तन
कुल प्रतिष्ठान	7.34 करोड़	7.92 करोड़	7.97 % वृद्धि
कुल रोजगार	12.06 करोड़	12.81 करोड़	6.18 % वृद्धि

नए रोजगार	—	74.52 लाख	100% वृद्धि
व्यापार क्षेत्र कुल GVA	17.97 लाख करोड़ रु.	19.92 लाख करोड़ रु.	10.88 % वृद्धि
GVA Growth	—	—	16.77 % वृद्धि
महिला कार्यबल	—	29 %	100 % वृद्धि
महिला स्वामित्व वाला प्रतिष्ठान	26.2 %	27.0 %	0.8 % वृद्धि
इंटरनेट प्रयोग करने वाला प्रतिष्ठान	26.7 %	39.4 %	12.7 % वृद्धि

(स्रोत— MOSPI)

तालिका क्र. 2 ASUSE REPORT में ग्रामीण तथा शहरी स्थितियों का अध्ययन

क्षेत्र	2023–24 रिपोर्ट	2025 रिपोर्ट	परिवर्तन
ग्रामीण प्रतिष्ठान	17.94 %	31.06 %	13.12 % वृद्धि
शहरी प्रतिष्ठान	37.01 %	48.94 %	11.93 % वृद्धि
कुल	26.68 %	39.37 %	12.69 % वृद्धि

(स्रोत— MOSPI)

तालिका क्र. 3 केवल फुटकर व्यापारियों (ORT) का ASUSE REPORT का विश्लेषण

संकेतक	2023–24 रिपोर्ट	2025 रिपोर्ट	परिवर्तन
ORT का प्रतिष्ठानों में हिस्सा	27.07%	26.49%	0.58% कमी
ORT का रोजगार में हिस्सा	27.46%	27.55%	0.09 % वृद्धि

(स्रोत— MOSPI)

8. फुटकर व्यापारियों के संबंध में छत्तीसगढ़ की स्थिति –

ASUSE REPORT वर्ष 2023–24 के अनुसार राज्यवार कुल असंगठित व्यापार क्षेत्र में छत्तीसगढ़ का स्थान 12वाँ है, जिसके अंतर्गत 12.05 लाख प्रतिष्ठान सम्मिलित है। छत्तीसगढ़ शासन के श्रम विभाग पोर्टल में पंजीकृत असंगठित श्रमिकों की कुल संख्या 32,909 है।

तालिका क्र. 4 पंजीकृत असंगठित श्रमिक

श्रेणी	पंजीकृत संख्या	प्रतिशत %
फुटकर सब्जी, फल-फूल विक्रेता	17,896	54.37
फुटपाथ व्यापारी	5,976	18.15

चाय, चाट ठेला लगाने वाले	5,244	15.93
फेरी लगाने वाले	3,793	11.55
कुल	32,909	100

(स्रोत— MOSPI)

पंजीकृत असंगठित श्रमिकों की तुलना में सूचना के अभाव, अशिक्षा एवं जन-जागरूकता के अभाव के कारण श्रमिकों द्वारा पंजीकरण नहीं किया गया, जिससे अपंजीकृत असंगठित श्रमिकों की संख्या ज्यादा है। अपंजीकृत असंगठित श्रमिकों का उद्देश्य अपने रोजमर्रा के लिए आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त करना है। ASUSE 2022-23 एवं 2023-24 में छत्तीसगढ़ के तथ्यों का विश्लेषण निम्न तालिका में किया गया है—

संकेतक	2023-24 रिपोर्ट	2025 रिपोर्ट	परिवर्तन
कुल असंगठित गैर-कृषि प्रतिष्ठान	9.40 लाख	12.05 लाख	2.65 लाख वृद्धि
कुल रोजगार प्रति प्रतिष्ठान	18.08 लाख	22.68 लाख	4.6 लाख वृद्धि
औसत रोजगार	1.92 व्यक्ति	1.88 व्यक्ति	0.04 कमी

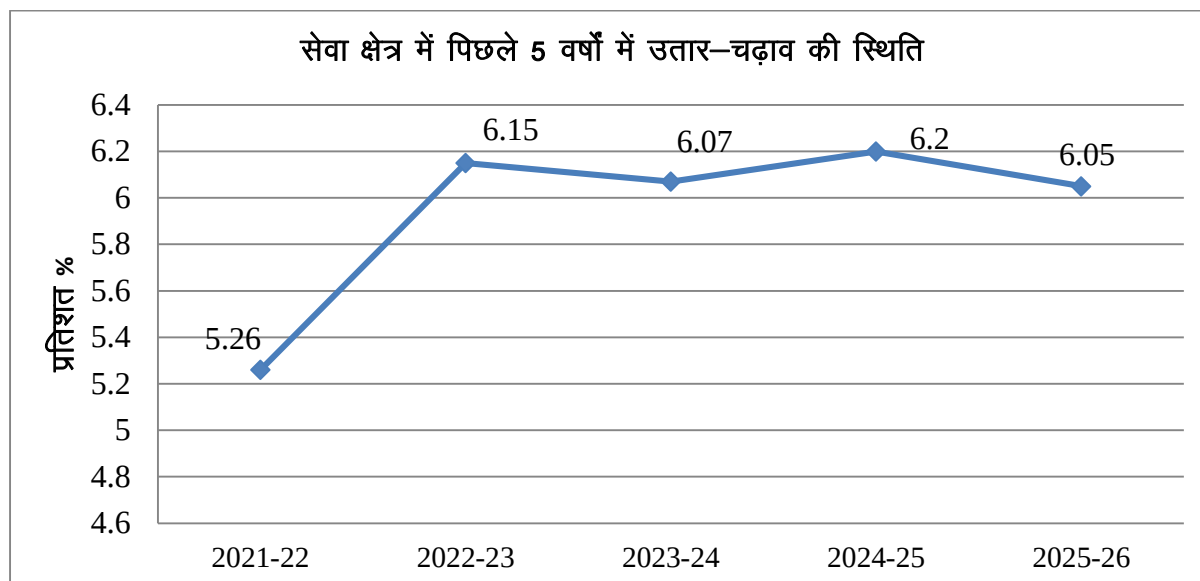
(स्रोत— MOSPI)

छत्तीसगढ़ राज्य के आर्थिक सर्वेक्षण में थोक एवं फुटकर व्यापार को भिन्न नहीं, बल्कि व्यापक श्रेणी के अंतर्गत व्यापार पोर्टल एवं जलपान के अंतर्गत प्रदर्शित किया गया है। यह व्यापक श्रेणी सेवा क्षेत्र के अंतर्गत आता है जिसे निम्न तरीके से दर्शाया गया है —

क्षेत्र	2025-26 में अनुमानित हिस्सा
स्थावर संपदा एवं व्यावसायिक सेवाएं	7.29%
अन्य सेवाएं	7.16%
व्यापार, होटल एवं जलपान	6.05%
परिवहन, संग्रहण एवं संचार	5.31%
लोक प्रशासन	3.78%
वित्तीय सेवाएं	3.30%
कुल सेवा क्षेत्र	32.90%

(स्रोत— छत्तीसगढ़ आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26)

सेवा क्षेत्र में पिछले 5 वर्षों में उतार-चढ़ाव की स्थिति रही है, जिसे निम्न चित्र के माध्यम (प्रतिशत %)से समझा जा सकता है —



असंगठित क्षेत्र में संलग्न फुटकर व्यापारी का समाज एवं अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। फुटकर व्यापारियों द्वारा घरेलू एवं कृषि उत्पाद की बिक्री तथा थोक व्यापारी द्वारा आसानी से सामानों को खरीदी कर प्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ताओं तक पहुंच आसानी से होता है तथा वह उस प्राप्त धन का उपयोग रोजमर्रा की जीवन यापन पर लगाते हैं, इससे रोजगार की स्थिति मजबूत होती है तथा छोटे व्यापारी एवं कृषकों की सामाजिक स्थिति ठीक होती है।

फुटकर व्यापारियों के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार सृजन होता है, जिससे संबंधित क्षेत्र की आर्थिक स्थिति में सुधार आता है। फुटकर व्यापारी सामान्यतः स्थानीय बाजारों में पहुंच स्थापित करते हैं, जिससे संबंधित क्षेत्रों को राजस्व की प्राप्ति होती है, जिनका उपयोग जन कल्याण के रूप में बेहतर सेवाओं के लिए किया जाता है तथा छोटे उद्योग को भी बढ़ावा मिलता है। इनके माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं शहरी अर्थव्यवस्था के मध्य संबंध सुदृढ़ होते हैं, जो कि क्षेत्र के विकास के लिए आवश्यक है।

9. फुटकर व्यापारियों के मुख्य लाभ

1. स्वरोजगार—इनके माध्यम से कम लागत एवं पूंजी में स्वयं का व्यवसाय की शुरुआत की जा सकती है, जिससे प्रति व्यक्ति आय के स्तर को और मजबूती प्रदान की जा सकती है।
2. निर्भरता दर की में कमी —इससे आश्रित लोगों के स्वरोजगार के कारण निर्भरता दर में कमी आती है, जिससे वह अपने आर्थिक फैसले स्वयं ले सकता है। यही आर्थिक स्वतंत्रता का स्तर है।
3. आर्थिक विकास में सहायक —संबंधित क्षेत्र में फुटकर व्यापारियों के कार्य करने से धन का प्रवाह बना रहता है, जो कि आर्थिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

4. ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती— स्थानीय बाजार से प्राप्त राजस्व एवं लोगों में आर्थिक स्थिति की मजबूत स्थिति से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में विकास की संभावना बढ़ जाती है।
5. उद्यमिता का विकास — फुटकर व्यापारी व्यवसाय से प्राप्त धन को अन्य व्यवसाय में निवेश कर और अधिक पूंजी बना सकते हैं।
6. आधारभूत संरचनाओं का विकास —प्रति व्यक्ति आर्थिक स्थिति मजबूत होने, निर्भरता दर में कमी, आर्थिक स्वतंत्रता की सुदृढ़ता सुनिश्चित होने उपरांत जन-जागरूकता एवं सशक्तिकरण की दिशा में संरचनाओं का समूचा विकास होता है।
7. निवेश की संभावना में वृद्धि — उत्पादन वृद्धि, मांग एवं आपूर्ति में सामंजस्य एवं समन्वय उपरांत उस क्षेत्र में निवेश के लिए आवश्यक सकारात्मक स्थिति उत्पन्न होती है।

10. फुटकर व्यापारियों के समक्ष चुनौतियां —

1. बैंकों एवं अन्य वित्तीय संस्थानों से ऋण लेने में कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है साथ ही ब्याज की दर उच्च होने के कारण लाभ की तुलना में हानि की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
2. कई बार ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है कि एक ऋण को चुकाने के लिए दूसरा ऋण लेना पड़ता है, जिससे व्यापारी ऋण संजाल में फंस जाता है।
3. फुटकर व्यापारियों जो आमतौर पर रोड, फुटपाथ पर सामान्यतः अपनी रेडी-ठेले, दुकान लगाते हैं, जिसके कारण स्थानीय प्रशासन से भी कई प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ता है। एक तरफ स्थान का अभाव तथा दूसरी ओर कठोर नियम एवं कानून से व्यापारियों के मनोबल पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
4. फुटकर व्यापारियों प्रतिदिन या दैनिक आय पर निर्भर रहते हैं, यदि बाजार किसी समस्या से असंतुलित हो या मौसमी एवं प्राकृतिक आपदा का सामना करना पड़े तो निश्चित आय की प्राप्ति से भी वंचित हो जाते हैं, जिससे उनके सामाजिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है।
5. प्राप्त निश्चित आय का एक बड़ा हिस्सा जीवन यापन में खर्च हो जाने के कारण बचत में कमी आती है, जिससे आकस्मिक खर्च जैसे खराब स्वास्थ्य इत्यादि जैसी समस्याओं का सामना करने में विफल हो जाते हैं। इन्हीं सभी कारणों से उनकी सामाजिक सुरक्षा प्रभावित होती है।
6. प्रतिस्पर्धा के क्रम में बड़े व्यापारियों से सामना करना एक अत्यंत चुनौती युक्त समस्या है। वित्तीय साक्षरता में कमी, जागरूकता का अभाव एवं अशिक्षा इत्यादि के कारण डिजिटल युग में प्रतिस्पर्धा करना वृहद चुनौती पैदा कर सकती है।
7. अनिश्चित एवं दैनिक आय के कारण तथा बचत में कमी से पर्याप्त निवेश की संभावना कम हो जाती है।

11. निष्कर्ष

फुटकर व्यापारी अर्थव्यवस्था के सुचारु रूप से संचालन के लिए अत्यंत आवश्यक है। इससे रोजगार सृजन, स्वरोजगार एवं उद्यमिता में वृद्धि, आर्थिक विकास एवं संवृद्धि जैसी अवधारणा को सुदृढ़

बनती है, परंतु उनकी समस्याओं को नजर अंदाज करना उसे क्षेत्र के स्थानीय सह विकास की गति को कमजोर करने जैसा है। इसके लिए उन्हें स्थानीय बाजार में स्थान, सामाजिक सुरक्षा, डिजिटल अर्थव्यवस्था से जुड़ने तथा जागरूक करने, निवेश की सही संरचना के साथ बचत के अन्य तरीके के प्रति सशक्त बनाकर आर्थिक गतिविधियों को और मजबूत किया जा सकता है। फुटकर व्यापारियों के सशक्तिकरण से बाजारवादी परितंत्र में आर्थिक सकारात्मक पहलू उत्पन्न होगी, जो अर्थव्यवस्था के विभिन्न आयामों को संतुलित करने में सहायक होती है।

12. संदर्भ ग्रंथ सूची—

1. सिंह, रामपाल (2021), भारतीय खुदरा व्यापार का बदलता स्वरूप, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
2. शर्मा.ए. एवं मिश्रा, एस. (2021), "स्मॉल टाउन रिलेटेस एंड द ई-कॉमर्स वेब" इंडियन जर्नल ऑफ मार्केटिंग, खंड 51, अंक 3।
3. वर्मा .आर.के. (2022)"छत्तीसगढ़ के अर्ध-शहरी क्षेत्रों में असंगठित क्षेत्र के व्यापारियों की वित्तीय चुनौतियाँ" शोध अमृत पत्रिका, बिलासपुर विश्वविद्यालय।
4. गुप्ता.पी. एवं राव.राम (2024) "इंपैक्ट ऑफ डिजिटलाइजेशन आन ट्रेडीशनल किराना स्टोर्स" जर्नल ऑफ बिजनेस एंड इकोनामिक स्टडीज, 18(2).
5. छत्तीसगढ़ शासन, जिला सांख्यिकी पुस्तिका, योजना आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग।
6. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (NSSO), भारत सरकार असंगठित गैर- कृषि उद्यमियों पर रिपोर्ट।
7. छत्तीसगढ़ आर्थिक सर्वेक्षण 2025—26।
8. (MOSPI) Ministry of statistics and programme Implementation की (ASUSE REPORT)।